जपु जी साहिब

१ओ (ऐक ओंकार) सति (सत्य) नामु करता पुरखु
निरभउ निरैवरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुरप्रसादि ।।

।। जपु ।।

आदि सचु जुगादि सचु ।।
है भी सचु नानक होसी भी सचु ।। १ ।।
सोचै सोचि न होवई
जे सोची लख वार ।।
चुपै चुप न होवई
जे लाइ (लाय) रहा लिव तार ।।
भुखिआ भुख न उतरी

(भुखया)

जे बंना पुरीआ भार ।।
(पुरिया)

सहस सिआणपा लख होहि
(स्याणपा) (होएं)

त इक न चलै नालि ।।

किव सचिआरा होईऐ
(सचयारा) (होइये)

किव कूड़ै तुटे पालि ।।

हुकमि रजाई चलणा

नानक लिखिआ नालि ।। १ ।।
(लिखया)

हुकमी होवनि आकार

हुकमु न कहिआ जाई ।।
(कहिया)

हुकमी होवनि जीअ
(जीऽ...ऽ)

हुकमि मिलै वडिआई ।।
(वडयाई)

हुकमी उतमु नीचु
हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि (पाइयें) ।।
इकना हुकमी बखसीस
इकि हुकमी सदा भवाईअहि (भवाइयें) ।।
हुकमै अंदरि सभु को
बाहरि हुकम न कोइ (कोय) ।।
नानक हुकमै जे बुझै
त हउमै कहै न कोइ (कोय) ।। २ ।।
गावै को ताणु होवै किसै ताणु ।।
गावै को दाति जाणै नीसाणु ।।
गावै को गुण वडिआईआ (वडियाइयां) चार ।।
गावै को विदिआ (विद्या) विखमु वीचारु ।।

गावै को साजि करे तनु खेह ।।
गावै को जीअ (जीऽ...ऽ) लै फिरि देह ।।
गावै को जापै दिसै दूरि ।।
गावै को वेखै हादरा हदूरि ।।
कथना कथी न आवै तोटि ।।
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ।।
देदा दे लैदे थकि पाहि (पाएं) ।।
जुगा जुगंतरि खाही खाहि (खाएं) ।।
हुकमी हुकमु चलाए राहु ।।
नानक विगसै वेपरवाहु ।। ३ ।।
साचा साहिबु साचु नाइ (नाय)
भाखिआ (भाखया) भाव अपारु ।।

आखहि (आखें) मंगहि (मगें) देहि देहि

दाति करे दातारु ।।

फेरि कि अगै रखीऐ (रखिये)

जितु दिसै दरबारु ।।

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ (बोलिये)

जितु सुणि धरे पिआरु (प्यारू) ।।

अम्रित बेला सचु नाउ (नाव)

वडिआई (वडियाई) वीचारु ।।

करमी आवै कपड़ा

नदरी मोखु दुआरु (दवारू) ।।

नानक एवै जाणीऐ (जाणिये)

सभु आपे सचिआरु ।। ४ ।।
(सचयारू)

थापिआ न जाइ कीता न होइ ।।
(थापया) (जाए) (होय)

आपे आपि निरंजनु सोइ ।।

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ।।
(सेवया) (पाया)

नानक गावीऐ गुणी निधानु ।।
(गाविये)

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ।।
(गाविये) (सुणिये) (रखीऐ)

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ।।
(जाय)

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
गुरमुखि रहिआ समाई ।।
(रहया)

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा
गुरु पारबती माई ।।

जे हउ जाणा आखवा नाही
कहणा कथनु न जाई ।।
गुरा इक देहि (देंए) बुझाई ।।
सभना जीआ (जीऽ...ऽ) का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ।। ५ ।।
तीरथि नावा जे तिसु भावा
विणु भाणे कि नाइ (नाय) करी ।।
जेती सिरठि उपाई वेखा
विणु करमा कि मिलै लई ।।
मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी ।।
गुरा इक देहि (देंए) बुझाई ।।

सभना जीआ (जिया) का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ।। ६ ।।
जे जुग चारे आरजा
होर दसूणी होइ (होय) ।।
नवा खंडा विचि जाणीऐ (जाणिये)
नालि चलै सभु कोइ ।।
चंगा नाउ (नाव) रखाइ (रखाय) कै
जसु कीरति जगि लेइ (लेय) ।।
जे तिसु नदरि न आवई
त वात न पुछै के ।।
कीटा अंदरि कीटु
करि दोसी दोसु धरे ।।

नानक निरगुणि गुणु करे
गुणवंतिआ (गुणवंतया) गुणु दे ।।
तेहा कोइ (कोय) न सुझई
जि तिसु गुणु कोइ करे ।। ७ ।।
सुणिऐ (सुणये) सिध पीर सुरि नाथ ।।
सुणिऐ (सुणये) धरति धवल आकाश ।।
सुणिऐ (सुणये) दीप लोअ पाताल ।।
सुणिऐ (सुणये) पोहि (पोयं) न सकै कालु ।।
नानक भगता सदा विगासु ।।
सुणिऐ (सुणये) दूख पाप का नासु ।। ८ ।।
सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ।।

(सुणये)

सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ।।

(सुणये)

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ।।

(सुणये)

सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ।।

(सुणये)

नानक भगता सदा विगासु ।।

(सुणये)

सुणिऐ दूख पाप का नासु ।। ९ ।।

(सुणये)

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ।।

(सुणये)

सुणिऐ अठसठि का इसनानु ।।

(सुणये)

सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ।।

(पावें)

(सुणये)

सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ।।

(सुणये)

नानक भगता सदा विगासु ।।

सुणिऐ (सुणये) दूख पाप का नासु ।। १० ।।

सुणिऐ (सुणये) सरा गुणा के गाह ।।

सुणिऐ (सुणये) सेख पीर पातिसाह ।।

सुणिऐ (सुणये) अंधे पावहि (पावें) राहु ।।

सुणिऐ (सुणये) हाथ होवै असगाहु ।।

नानक भगता सदा विगासु ।।

सुणिऐ (सुणये) दूख पाप का नासु ।। ११ ।।

मंने की गति कही न जाइ (जाय) ।।

जे को कहै पिछै पछुताइ (पेछुताय) ।।

कागदि कलम न लिखणहारु ।।

मंने का बहि करनि वीचारु ।।

ऐसा नामु निरंजनु होइ (होय) ।।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ (कोय) ।। १२ ।।

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ।।

मंनै सगल भवण की सुधि ।।

मंनै मुहि (मुएं) चोटा ना खाइ (खाय) ।।

मंनै जम कै साथि न जाइ (खाय) ।।

ऐसा नामु निरंजनु होइ (होये) ।।

जे को मंनि जाणै मनि कोइ (कोय) ।। १३ ।।

मंनै मारंगि ठाक न पाइ (पाय) ।।

मंनै पति सिउ (स्यों) परगटु जाइ (जाय) ।।

मंनै मगु न चलै पंथु ।।

मंनै धरम सेती सनबंधु ।।
ऐसा नामु निरंजनु होइ ।।
(होय)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।। १४ ।।
(कोय)

मंनै पावहि मोखु दुआरु ।।
(पावें)
मंनै परवारै साधारु ।।
मंनै तरै तारे गुरु सिख ।।
मंनै नानक भवहि न भिख ।।
(भवें)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ।।
(होय)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।। १५ ।।
(कोय)

पंच परवाण पंच परधानु ।।
पंचे पावहि दरगहि मानु ।।
(पावें) (दरगें)

पंचे सोहहि (सोहें) दरि राजानु ।।

पंचा का गुरु एकु धिआनु (ध्यानु) ।।

जे (जे) को कहै करै वीचारु ।।

करते कै करणै नाही सुमारु ।।

धौलु धरमु दइआ (दया) का पूतु ।।

संतोखु थापि रखिआ (रखवा) जिनि सूति ।।

जे को बुझै होवै सचिआरु (सचयारू) ।।

धवलै उपरि केता भारु ।।

धरती होरु परै होरु होरु ।।

तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ।।

जीअ जाति रंगा के नाव ।।

सभना लिखिआ (लिखया) वुड़ी कलाम ।।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ (कोय) ।।

लेखा लिखिआ (लिखया) केता होइ (होय) ।।

केता ताणु सुआलिहु (स्वालिहु) रूपु ।।

केती दाति जाणै कौणु कूतु ।।

कीता पसाउ (पसाब) एको कवाउ (कवाव) ।।

तिस ते होए लख दरीआउ (दरियाव) ।।

कुदरति कवण कहा वीचारु ।।

वारिआ (वारया) न जावा एक वार ।।

जो तुधु भावै साई भली कार ।।

तू सदा सलामति निरंकार ।। १६ ।।

असंख जप असंख भाउ (भाव) ।।
असंख पूजा असंख तप ताउ (ताव) ।।
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ।।
असंख जोग मनि रहहि (रहें) उदास ।।
असंख भगत गुण गिआन वीचार ।।
असंख सती असंख दातार ।।
असंख सूर मुह भख सार ।।
असंख मोनि लिव लाइ तार ।।
कुदरति कवण कहा वीचारु ।।
वारिआ (वारया) न जावा एक वार ।।
जो तुधु भावै साई भली कार ।।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १७ ।।

असंख मूरख अंध घोर ।।
असंख चोर हरामखोर ।।
असंख अमर करि जाहि (जाएं) जोर ।।
असंख गलवढ हतिआ (हत्या) कमाहि (कमाएं) ।।
असंख पापी पापु करि जाहि (जाएं) ।।
असंख कूड़िआर (कुड़यार) कूड़े फिराहि (फिराएं) ।।
असंख मलेछ मलु भखि खवाहि (खाएं) ।।
असंख निंदक सिरि करहि (करें) भारु ।।
नानकु नीचु कहै वीचारु ।।
वारिआ (वारया) न जावा एक वार ।।
जो तुधु भावै साई भली कार।।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १८ ।।

असंख नाव असंख थाव ।।
अगंम अगंम असंख लोअ ।।
असंख कहहि (कहें) सिरि भारु होइ (होय) ।।
अखरी नामु अखरी सालाह ।।
अखरी गिआनु (ग्यानु) गीत गुण गाह ।।
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ।।
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ।।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि (नाएँ) ।।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि (पाएं) ।।
जेता कीता तेता नाउ (नाव) ।।
विणु नावै नाही को थाउ (थाव) ।।
कुदरति कवण कहा वीचारु ।।

वारिआ (वारया) न जावा एक वार ।।
जो तुधु भावै साई भली कार ।।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १९ ।।
भरीऐ (भरिये) हथु पैरु तनु देह ।।
पाणी धोतै उतरसु खेह ।।
मूत पलीती कपडु होइ (होय) ।।
दे साबूणु लईऐ (लइये) ओहु धोइ (धोय) ।।
भरीऐ (भरिये) मति पापा कै संगि ।।
ओहु धोपै नावै कै रंगि ।।
पुंनी पापी आखणु नाहि (नाएं) ।।
करि करि करणा लिखि लै जाहु (जाओ) ।।
आपे बीजि आपे ही खाहु (खाओ) ।।

नानक हुकमी आवहु (आओ) जाहु (जाओ) ।। २० ।।

तीरथु तपु दइआ (दया) दतु दानु ।।

जे को पावै तिल का मानु ।।

सुणिआ (सुणया) मंनिआ (मनया) मनि कीता भाउ (भाव) ।।

अंतरगति तीरथि मलि नाउ (नाव) ।।

सभि गुण तेरे मै नाही होइ (होय) ।।

विणु गुण कीते भगति न कोइ (कोय) ।।

सुअसति (स्वसत्य) आथि बाणी बरमाउ (बरमाव) ।।

सति (सत्य) सुहाणु सदा मनि चाउ (चाव) ।।

कवणु सु वेला वखतु कवणु
कवण थिति कवणु वारु ।।

कवणि सि रुती माहु कवणु
जितु होआ आकारु ।।
वेल न पाईआ पंडती
(पाइया)
जि होवै लेखु पुराणु ।।
वखतु न पाइओ कादीआ
(पायो) (कादिया)
जि लिखनि लेखु कुराणु ।।
थिति वारु ना जोगी जाणै
रुति माहु ना कोई ।।
जा करता सिरठी कउ साजे
(कों)
आपे जाणै सोई ।।
किव करि आखा किव सालाही
किउ वरनी किव जाणा ।।
नानक आखणि सभु को आखै

इक दू इकु सिआणा (स्याणा) ।।
वडा साहिबु वडी नाई
कीता जा का होवै ।।
नानक जे को आपौ जाणै
अगै गइआ (गया) न सोहै ।। २१ ।।

पाताला पाताल लख
आगासा आगास ।।
ओड़क ओड़क भालि थके
वेद कहनि इक वात ।।
सहस अठारह कहनि कतेबा
असुलू इकु धातु ।।
लेखा होइ (होय) त लिखीऐ (लिखिये)
लेखै होइ (होय) विणासु ।।

नानक वडा आखीऐ (आखियें)
आपे जाणै आपु ।। २२ ।।
सालाही सालाहि (सालाएं)
एती सुरति न पाईआ (पोइया) ।।
नदीआ (नदिया) अतै वाह
पवहि (पवें) समुंदि न जाणीअहि (जाणियें) ।।
समुंद साह सुलतान
गिरहा सेती मालु धनु ।।
कीड़ी तुलि न होवनी
जे तिसु मनहु न वीसरहि (वीसरें) ।। २३ ।।
अंतु न सिफती कहणि न अंतु ।।
अंतु न करणै देणि न अंतु ।।

अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ।।
अंतु न जापै किआ (क्या) मनि मंतु ।।
अंतु न जापै कीता आकारु ।।
अंतु न जापै पारावारु ।।
अंतु कारणि केते बिललाहि (बिल्लाएं) ।।
ता के अंत न पाए जाहि (जाएं) ।।
एहु अंतु न जाणै कोइ (कोय) ।।
बहुता कहीऐ बहुता होइ (होय) ।।
वडा साहिबु ऊचा थाउ (थाव) ।।
ऊचे उपरि ऊचा नाउ (नाव) ।।
एवडु ऊचा होवै कोइ ।।

तिसु ऊचे कउ (कों) जाणै सोइ (सोय) ।।
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ।।
नानक नदरी करमी दाति ।। २४ ।।
बहुता करमु लिखिआ (लिखया) ना जाइ (जाय) ।।
वडा दाता तिलु न तमाइ ।।
केते मंगहि (मंगें) जोध अपार ।।
केतिआ (केतया) गणत नही वीचारु ।।
केते खपि तुटहि (तुटें) वेकार ।।
केते लै लै मुकरु पाहि (पाएं) ।।
केते मूरख खाही खाहि ।।
केतिआ (केतया) दूख भूख सद मार ।।

एहि भि दाति तेरी दातार ।।

(ऐं)

बंदि खलासी भाणै होइ ।।
(होय)

होरु आखि न सकै कोइ ।।
(कोय)

जे को खाइकु आखणि पाइ ।।
(पाय)

ओहु जाणै जेतिआ मुहि खाइ ।।
(खाय)

आपे जाणै आपे देइ ।।

आखहि (आखें) सि भि केई केइ (केय) ।।

जिस नो बखसे सिफति सालाह ।।

नानक पातिसाही पातिसाहु ।। २५ ।।

अमुल गुण अमुल वापार ।।

अमुल वापारीए (वापारिय) अमुल भंडार।।

अमुल आवहि (आवें) अमुल लै जाहि (जाएं) ।।

अमुल भाइ (भाय) अमुला समाहि (समाएं) ।।

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ।।

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ।।

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ।।

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ।।

अमुलो अमुलु आखिआ (आखया) न जाइ (जाय) ।।

आखि आखि रहे लिव लाइ (लाय) ।।

आखहि (आखें) वेद पाठ पुराण ।।

आखहि (आखें) पड़े करहि (करें) वखिआण (वखयाण) ।।

आखहि (आखें) बरमे आखहि (आखें) इंद ।।

आखहि (आखें) गोपी तै गोविंद ।।

आखहि (आखें) ईसर आखहि (आखें) सिध ।।

आखहि (आखें) केते कीते बुध ।।

आखहि (आखें) दानव आखहि (आखें) देव ।।

आखहि (आखें) सुरि नर मुनि जन सेव ।।

केते आखहि (आखें) आखणि पाहि (पाएं) ।।

केते कहि (कें) कहि (कें) उठि उठि जाहि (जाएं) ।।

एते कीते होरि करहि (करें) ।।

ता आखि न सकहि (सकें) केई केइ (केय) ।।

जेवडु भावै तेवडु होइ (होय) ।।

नानक जाणै साचा सोइ (सोय) ।।

जे को आखै बोलु विगाडु ।।
ता लिखीऐ
सिरि गावारा गावारु ।। २६ ।।
  सो दरु केहा सो घरु केहा
जितु बहि सरब समाले ।।
बाजे नाद अनेक असंखा
केते वावणहारे ।।
केते राग परी सिउ कहीअनि
केते गावणहारे ।।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु
गावै राजा धरमु दुआरे ।।
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि
लिखि लिखि धरमु वीचारे ।।

गावहि ईसरु बरमा देवी
सोहनि सदा सवारे ।।
गावहि (गावें) इंद इदासणि बैठे
देवतिआ (देवतया) दरि नाले ।।
गावहि (गावें) सिध समाधी अंदरि
गावनि (गावें) साध विचारे ।।
गावनि (गावें) जती सती संतोखी
गावहि (गावें) वीर करारे ।।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर
जुगु जुगु वेदा नाले ।।
गावहि (गावें) मोहणीआ (मोहणिया) मनु मोहनि
सुरगा मछ पइआले ।।

(पयाले)

गावनि रतन उपाए तेरे
अठसठि तीरथ नाले ।।
गावहि (गावें) जोध महाबल सूरा
गावहि (गावें) खाणी चारे ।।
गावहि (गावें) खंड मंडल वरभंडा
करि करि रखे धारे ।।
सेई तुधुनो गावहि (गावें) जो तुधु भावनि
रते तेरे भगत रसाले ।।
होरि केते गावनि
से मै चिति न आवनि
नानकु किआ (क्या) वीचारे ।।

सोई सोई सदा सचु
साहिबु साचा साची नाई ।।
है भी होसी जाइ (जाय) न जासी
रचना जिनि रचाई ।।
रंगी रंगी भाती करि करि
जिनसी माइ (माया)आ जिनि उपाई ।।
करि करि वेखै कीता आपणा
जिव तिस दी वडि (वडयाई)आई ।।
जो तिसु भावै सोई करसी
हुकमु न करणा जाई ।।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई ।। २७ ।।

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन (ध्यान) की करहि (करे) बिभूति ।।
खिंथा कालु कुआरी (क्वारी) काइआ (काया) जुगति
डंडा परतीति ।।
आई पंथी सगल जमाती
मनि जीतै जगु जीतु ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ।। २८ ।।
भुगति गिआनु (ग्यान) दइआ (दिया) भंडारणि
घटि घटि वाजहि (वाजे) नाद ।।
आपि नाथु नाथी सभ जा की
रिधि सिधि अवरा साद ।।

संजोगु विजोगु दुइ (दुय) कार चलावहि (चलावें)
लेखे आवहि (आवें) भाग ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ।। २९ ।।
एका माई जुगति विआई (व्याई)
तिनि चेले परवाणु ।।
इकु संसारी इकु भंडारी
इकु लाए दीबाणु ।।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै
जिव होवै फुरमाणु ।।
ओहु (औं) वेखै ओना नदरि न आवै

बहुता एहु (एओ) विडाणु ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ।। ३० ।।
आसणु लोइ (लोय) लोइ (लोय) भंडार ।।
जो किछु पाइआ (पाया) सु एका वार ।।
करि करि वेखै सिरजणहारु ।।
नानक सचे की साची कार ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।।
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु एको वेसु ।। ३१ ।।
इक दू जीभौ लख होहि (होए)

लख होवहि (होवें) लख वीस ।।
लखु लखु गेड़ा आखीअहि (आखियें)
एकु नामु जगदीस ।।
एतु राहि (राएं) पति पवड़ीआ (पवड़िया)
चड़ीऐ (चड़िये) होइ (होय) इकीस ।।
सुणि गला आकास की
कीटा आई रीस ।।
नानक नदरी पाईऐ
कूड़ी कूड़ै ठीस ।। ३२ ।।
आखणि जोरु चुपै नह जोरु ।।
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ।।
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु।।
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ।।

जोरु न सुरती गिआनि (ग्यानि) वीचारि।।
जोरु न जुगती छुटै संसारु ।।
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ (सोय) ।।
नानक उतमु नीचु न कोइ (कोय) ।। ३३ ।।
राती रुती थिती वार ।।
पवण पाणी अगनी पाताल ।।
तिसु विचि धरती थापि रखी
धरमसाल ।।
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ।।
तिन के नाम अनेक अनंत ।।
करमी करमी होइ (होय) वीचारु ।।
सचा आपि सचा दरबारु ।।

तिथै सोहनि पंच परवाणु ।।
नदरी करमि पवै नीसाणु ।।
कच पकाई ओथै पाइ (पाय) ।।
नानक गइआ (गया) जापै जाइ (जाय) ।। ३४ ।।

धरम खंड का एहो धरमु ।।
गिआन (ग्यान) खंड का आखहु (आखों) करमु ।।
केते पवण पाणी वैसंतर
केते कान महेस ।।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि (घड़िये)
रूप रंग के वेस ।।
केतीआ (केतिया) करम भूमी मेर केते
केते धू उपदेस ।।

केते इंद चंद सूर केते
केते मंडल देस ।।
केते सिध बुध नाथ केते
केते देवी वेस ।।
केते देव दानव मुनि केते
केते रतन समुंद ।।
केतीआ (केतिया) खाणी केतीआ (केतिया) बाणी
केते पात नरिंद ।।
केतीआ (केतिया) सुरती सेवक केते
नानक अंतु न अंतु ।। ३५ ।।
गिआन (ग्यान) खंड महि (में) गिआनु (ग्यान) परचंडु ।।
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ।।
सरम खंड की बाणी रूपु ।।

तिथै घाड़ति घड़ीऐ (घड़िये) बहुतु अनूपु ।।

ता कीआ (किया) गला कथीआ (कथिया) ना जाहि (जाए) ।।

जे को कहै पिछै पछुताइ ।।

तिथै घड़ीऐ (घड़िये)

सुरति मति मनि बुधि ।।

तिथै घड़ीऐ (घड़िये)

सुरा सिधा की सुधि ।। ३६ ।।

करम खंड की बाणी जोरु ।।

तिथै होरु न कोई होरु ।।

तिथै जोध महाबल सूर ।।

तिन महि (में) रामु रहिआ (रहया) भरपूर ।।

तिथै सीतो सीता महिमा माहि (माएं) ।।

ता के रूप न कथने जाहि (जाएं) ।।
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि (जाएं) ।।
जिन कै रामु वसै मन माहि (माएं) ।।
तिथै भगत वसहि (वसें) के लोअ ।।
करहि (करें) अनंदु सचा मनि सोइ (सोय) ।।
सच खंडि वसै निरंकारु ।।
करि करि वेखै नदरि निहाल ।।
तिथै खंड मंडल वरभंड ।।
जे को कथै त अंत न अंत ।।
तिथै लोअ लोअ आकार ।।
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ।।
वेखै विगसै करि वीचारु ।।

नानक कथना करड़ा सारु ।। ३७ ।।
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु (सुनयारू) ।।
अहरणि मति वेदु हथीआरु (हथियारू) ।।
भउ खला अगनि तप ताउ ।।
भांडा भाउ (भाव) अंम्रितु तितु ढालि ।।
घडीऐ (घड़िये) सबदु सची टकसाल ।।
जिन कउ (कों) नदरि करमु
तिन कार ।।
नानक नदरी नदरि निहाल ।। ३८ ।।

सलोकु ।।

पवणु गुरू (गुरू) पाणी पिता

माता धरति महतु ।।
दिवसु राति दुइ (द्वय) दाई दइआ (दाया)
खेलै सगल जगतु ।।
चंगिआईआ (चंगयाइया) बुरिआईआ (बुरयाइया)
वाचै धरमु हदूरि ।।
करमी आपो आपणी
के नेड़ै के दूरि ।।
जिनी नामु धिआइआ (ध्याया)
गए मसकति घालि ।।
नानक ते मुख उजले
केती छुटी नालि ।। १ ।।

जपुजी साहिब के शब्दों का संधि-विच्छेद
तथा
गद्य अथवा पद्य में लिखने में अन्तर

१ओ	=	एक ओंकार	- इक+ओ+अंकार
सति	=	सत्य	- ि+ा = य
लाइ	=	लाय	- इ = य
भुखिआ	=	भुखया	- ि+अ = य
पुरीआ	=	पुरिया	- ि+अ = य
सिआणपा	=	स्याणपा	- ि+ा = य
होहि	=	होएं	- ि= े, ह= ं
सचिआरा	=	सचयारा	- ि+अ = य
होईऐ	=	होइये	- इ+ऐ = इये
लिखिआ	=	लिखया	- ि+अ = य
जीअ	=	जी ऽऽ	- अ = ऽ+ऽ
पाईअहि	=	पाइयें	- इ+अ = य, हि = एं
भवाईअहि	=	भवाइयें	- इ+अ = य, हि = एं
कोइ	=	कोय	- इ = य
वडिआईआ	=	वडयाइया	- डे+अ = य
विदिआ	=	विद्या विद्या	- डे+अ = य
पाहि	=	पाएं	- ि = ए, ह ं
जीआ	=	जिया	
पिआरु	=	प्यारु	- ि+अ = य
बोलीऐ	=	बोलिये	- ि+ये = ये
नाउ	=	नाव	- ए = व

दुआरु = द्वारु - उ+अ = व
गुणवंतिआ = गुणवंतया - ि+अ = य
सुणिऐ = सुणये - ि+ऐ = ये
गिआनु = ग्यानु = ज्ञानु - ि+अ = य
धिआनु = ध्यानु - ि+अ = य
पावहि = पावें - ि=े+ह=ं
सिउ = स्यों - ि+ा = य, उ =ों
जीअ = जी s+s - s+s = अ
सुआलिहु = स्वाल्यों - ु+ा = व
कवाउ = क्वाव - उ = व
दरीआउ= दरियाव - उ = व
रहहि = रहें - ि=े, ह =ं
हतिआ = हत्या - ि+ा = य
सुअसति = स्वासत्य - ु+ा = व, ा+ि= य
किउ = क्यों - ा+उ = यो
किआ = क्या - ि+ा = य
कउ = कों - ों
वापारीए = वापारिये - ि+ए = ये
करेहि = करैं - ि=े, ह =ं
कहीअनि = कहियनि - ि+अ = य
पइआले = पयाले - इ+अ = य
कुआरी = क्वारी - उ+ा = व
विआई = व्याई - ि+ा = य
घड़ीअहि = घडियें - ि+अन्य ि=े
लोअ = लो s s - अ = s+s
महि = में - ि=े, ह =ं